संवाद

सार्थक शिक्षण वह है जो विद्यार्थियों के जीवन, भाषा, अनुभव और परिवेश से जुड़कर विकसित हो— यही विचार इस अंक की विविध लेखों में प्रतिध्वनित होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2023) ने हमें शिक्षा को पुनः मानवीय, समावेशी और स्थानीय बनाकर सोचने के लिए प्रेरित किया है।

इस अंक के लेखों में प्राथमिक स्तर की शिक्षा को समझने और सुधारने के प्रयत्न स्पष्ट रूप से परिलक्षित होते हैं। 'शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में गूगल जेमिनी चैटबॉट की स्वीकृति' जैसे लेख डिजिटल माध्यमों के रचनात्मक उपयोग को प्रस्तुत करते हैं, वहीं 'बुनियादी साक्षरता और संख्या-ज्ञान' तथा 'बहुभाषी परिदृश्य में स्थानीय भाषा के प्रयोग' जैसे आलेख हमें जमीनी वास्तविकताओं की ओर ले जाते हैं। मातृभाषा में शिक्षा के शैक्षिक निहितार्थ, (आई.टी.ई.पी.) के माध्यम से अध्यापक शिक्षा के रूपांतरण तथा 'खेल योग' जैसी नई पाठ्यपुस्तकों का अवलोकन— यह सब शिक्षा की गुणवत्ता को गहराई से समझने की दिशा में सार्थक प्रयास हैं।

ड्रॉपआउट पर लेख शिक्षा के सामाजिक पक्ष को उजागर करता है, तो समावेशी शिक्षा, क्रॉस-डिसेबिलिटी और आर.टी.ई. के अंतर्गत निजी विद्यालयों में समावेशन जैसे विषय हमें हमारी नीतियों के व्यावहारिक पक्ष की जाँच-पड़ताल करने का अवसर देते हैं। आज जबकि भारत में शिक्षा परिवर्तन के दौर से गुजर रही है, ऐसे में शिक्षकों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। शिक्षक तैयारियों को लेकर प्रस्तुत आलेख इस दिशा में उपयोगी संवाद को जन्म देते हैं।

इस अंक की विशेषता यह भी है कि इसमें शैक्षणिक शोध के साथ-साथ बाल-अभिव्यक्ति और साहित्यिक अनुभूतियों को भी स्थान दिया गया है। 'बालमन कुछ कहता है' स्तंभ में प्रकाशित कविता बच्चों की दुनिया को उनकी ही भाषा में व्यक्त करती है, जो शिक्षकों को बाल मनोविज्ञान से जुड़ने का अवसर देती है। ऐसे रचनात्मक आयाम यह संकेत देते हैं कि शिक्षा केवल सूचनाओं का संचरण नहीं, बल्कि अनुभव, भाव और संवाद का सेतु भी है। हमें विश्वास है कि 'प्राथमिक शिक्षक' का यह

अंक पाठकों को शिक्षा की नव-नवीन दिशाओं की ओर ले जाएगा और समावेशी, बाल-केंद्रित एवं नवाचारी शिक्षण के लिए प्रेरित करेगा।

यह अंक नीति, शोध, व्यवहार और नवाचार— सभी स्तरों पर संवाद को आमंत्रित करता है। आशा है कि हमारे पाठकगण इन लेखों के माध्यम से विचारों के नए द्वार खोलेंगे और अपने शिक्षण अनुभवों में नवप्रेरणा पाएँगे।

अकादमिक संपादक